श्री महावीर स्वामी जिनपूजा

श्रीमत वीर हरै भव पीर, भरै सुख-सीर अनाकुलताई।
केहरि-अंक अरी करदंक, नये हरि-पंकति-मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापतु हौ प्रभु, भक्ति-समेत हिये हरषाई।
हे करुणा धन धारक देव, इहां अव तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जल

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भव-पीर, यातैं धार करों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुण-धीर, सन्मति-दायक हो।। श्री वीर..

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

मलयागिरि-चन्दनसार, केशर-संग घसों।
प्रभु भव-आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं।। श्री वीर..

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

तन्दुलसित शशि-सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसुपुञ्ज धरों अविरुद्ध, पावौं शिव-नगरी।। श्री वीर..

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीले चावल

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ-भंजन-हेत, पूजों पद थारे।। श्री वीर..

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख-अरी।। श्री वीर..

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

पीली चिटकी

तम-खण्डित मण्डित-नेह, दीपक जोवत हो।
तुम पदतर हे सुख-गेह, भ्रम-तम खोवत हों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुण-धीर सन्मति-दायक हो।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

हरि चन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा।। श्री वीर...
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

ऋतु फल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों।
शिव-फल-हित हे जिनराय, तुम ढ़िग भेंटधरो।। श्री वीर...
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

जल-फल वसु सजि हिम-थार, तन-मन-मोदधरों।
गुण गाऊं भव-दधितार, पूजत पाप हरों।। श्री वीर...
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

राग-टप्पा चाल

मोहि राखो हो शरना, श्री वर्द्धमान जिनरायजी।
गरभ साढ़ सित छट्ठलियो तिथि, त्रिशला उर अघहरना।
सुर सुरपति तित सेव करो नित, मैं पूजों भव-तरना।
मोहि राखों हो शरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ निर्व० स्वाहा।

जनम चैतसित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन-वरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भव हरना।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला त्रयोदशां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुप चरना।। मोहि...

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुक्ल दशैं बैशाख दिवस अरि, घात चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजौंचरन सुखभरना।। मोहि...

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ल दशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुरतै वरना।
गण फनि वृन्द जजैतित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना।। मोहि...

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णमावस्या मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

卐 卐

छंद हरिगीता २८ मात्रा

गणधर असनिधर, चक्रधर हलधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर, विद्यासुधर, तिरशूलधर सेवहिं सदा।।
दुख हरन आनन्द भरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल, की जयमाल हैं।।

छन्द घत्तानन्द

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवताप निकंदन, तनकनमंदन रहित सपंदन नयनधरं।।

छंद त्रोटक

जय केवल-भानु कलासदनं, भविकोक-विकाशन-कंजवनं।
जगजीत महा रिपु मोहहरं, रज ज्ञानदृगांवर चूरकरं।।१।।

गर्भादिक मंगल मन्डित हो, दुखदारिद को नित खण्डित हो।
जगमांहिं तुम्ही सतपण्डित हो, तुमहीं भव भाव विहंडित हो।।२।।

हरिवंश सरोजनको रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।
लहिं केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलों सोई मारगराजतियो।।३।।

पुनि आपतने गुणमाहिं सही, सुरमग्न रहैं जितने सबही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं, लयमानिसों मन भावत हैं।।४।।

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुव भक्ति विषै पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहाँ तननं तननं।।५।।

धननं धननं धन घण्ट बजैं, दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांगन गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता बितता।।६।।

धृगतां धृगतां गति बाजत हैं, सुरताल रसाल जु छाजत हैं।
सननं सननं सननं नभमें, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमें।।७।।

कई नारि सु बीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जवल गावत हैं।
करतालविषै करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं।।८।।

इन आदि अनेंक उछाह भरी, सुरभक्ति करै प्रभुजी तुमरी।
तुमहीं जगजीवन के पितु हो, तुमही बिन कारण के हितु हो।।९।।

तुम ही सब विघ्न विनाशन हों, तुमही निज आनन्द भासन हो।
तुमही चित चिंतित दायक हो, जगमांहि तुम्ही सब लायक हो।।१०।।

तुमरे पन मंगल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सबही।
हमको तुमरी शरनागत हैं, तुमरे गुणमें मन पागत हैं।।११।।

प्रभु मोहिय आप सदा बसिये, जब लौ वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलौं तुम ध्यान हिये बरतो, तबलौं श्रुत चिंतन चित्तरतों।।१२।।

तबलौ व्रत चारित चाहतु हो, तबलौं शुभ भाव सुहाहतु हों।
तबलौं सतसंगति नित्त रहो, तबलौं मन संजम चित्त गहौं।।१३।।

जबलौं नहिं नाश करौं अरिको, शिव नारिवरों समता धरिको।
यह द्यो तबलौं हमको जिन जी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।।१४।।

घत्ता

श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा नाग नरेशा भगतिभरा।
"वृन्दावन" ध्यावै विघ्न नशावैं, वांछित पावै शर्मवरा।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री सन्मति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीति।
"वृन्दावन" सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत।।

इत्याशीर्वाद

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी। तुम में जितने गुण हैं तितनी।
कहि कौन सकै मुख सोंसब ही। तिहिं पूजत होंगहि अर्घ यही।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्ताभ्यों चतुर्विंशति जिनेभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त

ऋषभदेव को आदि अन्त, श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार।
तिनके चरण कमल को पूजैं, जो प्राणी गुणमाल उचार।।
ताके पुत्र मित्र धन जोबन, सुख समाज गुन मिले अपार।
सुरपद भोग भोगि चक्री व्है, अनुक्रम लहैं मोक्षपद सार।।

इत्याशीर्वाद।

श्री महावीर चालीसा

दोहा

सिद्धसमूह नमो सदा, अरू सुमरूं अरहन्त।
निर आकुल निर्बाच्छ हो, गये लोक के अन्त।।
मंगलमय मंगलकरन, वर्धमान महावीर।
तुम चिन्तत चिन्ता मिटे, हरो सकल भव पीर।।

चौपाई

जय महावीर दया के सागर, जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर।
शान्त छवी मूरत अति प्यारी, वेष दिगम्बर के तुम धारी।
कोटिभानु से अति छवि छाजैं, देखत तिमिर पाप सब भाजै।
महाबली अरिकर्म विदारे, जोधा मोह सुभट से मारे।
काम क्रोध तजि छोड़ी माया, क्षण में मानकषाय भगाया।
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी।